हि.प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

विभागीय परीक्षा सत्र सितम्बर–2020

हिन्दी (लिखित)

पेपर 2+4

समय–2 घण्टे

अंक– 60

नोटः–

1- सभी प्रश्न अनिवार्य है। कुल प्रश्न–7.

2- प्रत्येक प्रश्न के अंक कोष्ठक में दिये गये है।

प्रश्नः 1 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या सरल हिन्दी में करें।

Once, Shiva and Parvati were taking stroll in the sky. Parvati saw a mahout guiding an elephant through the forest and many creatures on the way were getting trampled. Seeing this, Parvati asked Shiva: "O Lord, you have explained to me how karmic principles work. However, I am not able to understand who will face the consequences of killing the creatures-the elephant or the mahout who is guiding it?" Shiva replied:" Dear Parvati, the sin of killing the creatures will be accrued neither to the elephant nor to the mahout. In fact, the sin will be credited to your account because you are reflecting too much on the sin committed by others."

Therefore, it is advisable to focus on the wrongdoings of others or else we will also become a party to their actions. People reap what they sow. In fact, we should guard ourselves from committing sin. It is difficult to know when, and what form, we will have to pay for our karmas. The fruits of some karmas are borne immediately just like water quenching thirst. There are some karmas, the effect of which are felt later, may be after few days, weeks, months or decades. Sometimes, karmic debts are carried over to the next birth.

This is specifically true for those actions performed with desire and ego. The Bhagwad Gita says, the just there is smoke in every fire, every action has a repercussion. May be the wrongdoers, who seem to be enjoying life are actually enjoying the fruits of good deeds they performed in the past, and they are yet to face the consequences of their present bad deeds. It could also be that they are already experiencing the fruits of their sinful acts, but we are not able to see it.

(15अंक)

प्रश्नः 2 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या सरल हिन्दी में करें।

हिमालय की रमणीयता से आकर्षित होकर हमारे देश के ऋषियों ने उसे अपनी साधना का स्थल बनाया। हिमालय की कंदराओं में साधना और तपस्या करके उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया, महान ग्रंथों की रचना की और संसार को सद्धर्म का मार्ग दिखलाया। उनकी इस साधना से वह सौंदर्य भूमि स्वतः पवित्र हो गई। वह यक्षों और गंधर्वों का निवास स्थान है ओर शिव का भी। जगतमाता पार्वती उसकी पुत्री है। शंकराचार्य ने वहीं बद्रीनाथ और केदारनाथ की मूर्तियां प्रतिष्ठित की, स्वामी रामतीर्थ और विवेकानन्द ने वही ज्ञान का प्रकाश प्राप्त किया। नंदा देवी की गरिमा के समक्ष आज तो सारा भारत नतमस्तक है।

आदिकाल से हमारे कवि हिमालय के सौंदर्य, उसकी गरिमा और महानता का वर्णन करते आये है। वाल्मीकि कालीदास और भवभूति को उससे काव्य प्रेरणा मिली है। वाल्मीकि की रामायण तथा कालीदास के कुमारसम्भव में हिमालय के सौन्दर्य का अद्भुत वर्णन है। मेघदूत का यक्ष तो हिमालय का ही निवासी था, और उसकी अल्कापुरी की कल्पना हिमालय प्रदेश में ही की गई है। कवि प्रसाद के महाकाव्य कामायनी की कथा का आरंभ भी हिमालय वर्णन से ही होता है। वहीं पर कवि ने जड़ और चेतन में एक ही तत्व के अस्तित्व का आभास प्राप्त किया। देश को कलाओं के विकास की प्रेरणा भी हिमालय में मिलती रही। चित्रकला और शैलियों का विकास हिमालय के प्रांगण में हुआ। वहां की जनजातियों के लोकगीत और लोकनृत्य सारे देश को आकर्षित करते है। वे सहज ही वहीं के निवासियों के जीवन की सरलता और शालीनता को व्यक्त करते है। इससे प्रतीत होता है कि हमारे देश की संस्कृति का हिमालय से घनिष्ट सम्बन्ध है।

कश्मीर से असम तक अनेक जनजातियां हिमालय के आंचल में बसी है। उनकी अपनी–अपनी भाषाएं अपना–अपना खानपान, अपना अलग रहन–सहन और अलग उद्योग धंधे है।

पर प्रदत मन की निश्छलता ने उन सभी को एक सूत्र में बांध दिया है। यद्यपि उन क्षेत्रों के निवासी अधिक साधन सम्पन्न नहीं पर उनको उद्योग–कलाओं का ऐसा वरदान मिला है जो उन्हें भौतिक जीवन का अनुभव नहीं करने देता। यद्यपि मशीनी सभ्यता के संसार में उनको अपने श्रम का शतांश मूल्य भी नहीं मिलता फिर भी उनकी व्यापक व्यक्तिगत सरलता उन्हें अपनी शाश्वत मान्यताओं को चिपटाए रहने के लिए विवश करती है। वे अपने देवता के मस्तक पर देदीप्यमान चन्द्रमा की भांति सुधा दृष्टि के भी अभ्यस्त है। संसार ने उन्हें कुछ नहीं दिया पर प्रकृति ने उनके लिए अपना हृदय उदारता से खोल दिया है। उनके फल–फूल है, उनकी नदियां है, झरने हैं, वन है, पशु–पक्षी है जो बिना प्रयास ही उनको वैभव सम्पन्न रखते है।

हिमालय सारे देश का रक्षक रहा है। आंधियों की भांति विदेशी सेनाएं आती और इससे टकराकर वापस चली जाती। आज हिमालय की छाया में पला–पोसा जवान हमारे देश का सबसे सजग एवं सशक्त रक्षक है। न जाने कितने योद्वाओं ने देश की रक्षा में अपने जीवन को न्योछावर कर दिया। उनके बलिदान से हिमालय का मस्तक गर्व से और ऊंचा हो गया है। हमारा चिर महान हिमालय अपने सपूतों की शक्ति पर सदैव गौरवन्वित रहेगा। (10अंक)

प्रश्न–3 भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा सभी विभागाध्यक्षों को निर्देश जारी किए गये है कि निदेशालय स्तर एवं उनके अधीनस्थ कार्यालयों में हिन्दी में कार्य किया जाए। किन्तु शत् प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने बारे आ रही कठिनाईओं से विभागाध्यक्ष को विस्तृत रूप से पत्र द्वारा सूचित करें।

(10 अंक)

प्रश्न–4 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें:–

1. Abuse of official position
2. Derogatory statement
3. Status quo
4. Order of eviction
5. Prima facie evidence
6. Back reference
7. Come into force
8. Under consideration

(8 अंक)

प्रश्न–5 निम्न मुहावरों एवं लोकोक्तियों के अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :–

1. पगड़ी उछालना।
2. काफूर हो जाना।
3. अन्धा गाए, बहरा बजाए।
4. थोथा चना बाजे घना।
5. अपना हाथ जगन्नाथ।

(5 अंक)

प्रश्न–6 निम्न शब्दों/वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखे:–

1. अनूपुरक
2. उजवल
3. अनुसुची
4. उद्योगीकरण
5. कार्यसुचि
6. फूलों की सौन्दर्यता देखते ही बनती है।
7. नदी का प्रबल वेग नौका का दुर बहा ले गई।

(7 अंक)

प्रश्न–7 निम्न अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखे:–

1. जिसे देखा न जा सके।
2. पन्द्रह दिन में एक बार होने वाला।
3. जिसका कोई आकार न हो।
4. दूसरों का उपकार करने वाला।
5. जो जल में रहता हो।

(5 अंक)

******

हि.प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

विभागीय परीक्षा सत्र सितम्बर–2020

पेपर हिन्दी (मौखिक) अंक– 40

समय–1 घण्टा

भारत स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तीव्र गति से कृषि सम्बन्धी, औद्योगिक और व्यवसायिक विकास के पथ पर अग्रसर हुआ है। हर क्षेत्र में आशातीत प्रगति हुई। आज देश की कृषि योग्य भूमि पर खेती हो रही है। सिंचाई के लिए प्रमुख नदियों पर भाखड़ा नंगल, दामोदर घाटी, नागार्जुन सागर और रिहिन्द आदि अनेक बांध बन चुके है। सारे देश में नहरों का जाल बिछ गया हैं किसानों को पम्पिंग सेट और नलकूल उपलब्ध है। प्रतिवर्ष सिंचाई व्यवस्था के लिए देश का करोड़ों रूपया व्यय हो रहा है। रासायनिक खादों के अनेक कारखाने लगाए जा चुके है। किसान ट्रैक्टर, कृषि यंत्रों एवं वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग कर रहे है। सरकार द्वारा वैज्ञानिक ढंग से खेती करने का व्यापक प्रशिक्षण दिया जा रहा है प्रगति के इन प्रयासों के परिणामस्वरूप हमारे कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है। किन्तु दूध, घी, तिलहन, दलहन, कपास आदि की कमी हम अनुभव कर रहे है।

इसी प्रकार स्वंतत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में औद्योगिक विकास भी हुआ और हम अपनी नित्यप्रति की आवश्यकता की सभी वस्तुओं का उत्पादन अपने देश में प्रचुर मात्रा में करने लगे है, फिर भी अपने को अभावों से मुक्त नहीं कर सके। हमारे शासन को जीवन के लिए नितान्त आवश्यक वस्तुओं के क्रय–विक्रय पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ता है। आज हम पहले से कई गुना निर्यात कर रहे है, फिर भी हमारे देश की गणना संसार के अविकसित देशों में की जाती है। हमें अपने विकास कार्यों के लिए दूसरे देशों के सामने हाथ फैलाने पड़ते है।

आज यातायात के साधनों का बहुत विकास हुआ है। लाखों बसें और रेलगाड़ियां रात–दिन देश की सड़कों पर दौड़ती है। फिर भी सुख से हम यात्रा नहीं कर पाते। बसों और रेलगाड़ियों में हमें अपार भीड़ का सामना करना पड़ता है। रेलवे प्लेटफॉर्म पर टिकट खरीदने के लिए घंटों लम्बी–लम्बी यात्राएं खड़े–खड़े करनी पड़ती है। विद्यालयों की संख्या पहले से दुगनी–चौगुनी हो गई है, फिर भी अनेक विद्यार्थियों की शिक्षा इसलिए रूक जाती है कि उन्हें किसी विद्यालय में प्रवेश नहीं मिलता चारों ओर भीड़ ही भीड़ दिखाई देती है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे भीड़ का सैलाब उमड़ आया हो।

आज देश में बेकारी, बेरोजगारी की समस्या बड़ी भयानक हो गई है। विशेष प्रशिक्षित व्यक्तियों को भी कार्य नहीं मिल पा रहा है। बेरोजगार नवयुवक तो असामाजिक कार्यों एवं नशे की ओर आकर्षित हो रहे है। इस स्थिति का मूल कारण देश की बढ़ती हुई जनसंख्या है। संसार के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री टामस माल्थस ने एक शताब्दी पूर्व यह चेतावनी दी थी कि यदि देश की खाद्य–सामग्री के उत्पादन में उसी अनुपातः में वृद्धि नहीं होती, जिस अनुपात में जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, तो जनता को पर्याप्त मात्रा में खाद्य–सामग्री प्राप्त नहीं होगी। हमने अपने देश में सभी क्षेत्रों में उत्पादन में वृद्धि तो की पर जनसंख्या की वृद्धि का अनुपात उत्पादन वृद्धि के अनुपात से कई गुना अधिक रहा। इसी कारण देशवासी अपने जीवन को सुखी और समृद्ध नहीं बना सके।

जनसंख्या की दृष्टि से हमारा भारत संसार का दूसरा सबसे बड़ा देश है। विश्व की जनसंख्या का छठा भाग भारत में बसा हुआ है, जबकि भारत का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का केवल 2.4 प्रतिशत है। आज हमारे देश की जनसंख्या एक अरब अड़तीस करोड़ के लगभग है। यदि इसी दर से वृद्धि होती रही तो हमारा देश चीन की डेढ़ अरब आबादी को पीछे छोड़ कर नम्बर एक पर आ जाएगा तब हमें भीषण समस्या का सामना करना पड़ेगा। अतः आज इस देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि इस समस्या पर गंभीरता से विचार करें और कुछ ऐसे प्रयत्न करें कि आगे आने वाली पीढ़ियों को कठिनाईयों का सामना न करना पड़े।

भारत में जनसंख्या वृद्धि को रोकने की इसलिए भी आवश्यकता है कि इसके साथ देश की अनेक महत्वपूर्ण समस्यायें जुड़ी है। इसकी वृद्धि को रोकने में हम तभी सफल हो सकेंगे जब इसकी वृद्धि के कारणों पर गंभीरता से विचार कर लें। सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि हमारे देश में सामान्य व्यक्तियों का जीवन के

प्रति सतही दृष्टिकोण है। वे अपने उतरदायित्वों के प्रति सजग नहीं है। उतरदायित्व का निष्ठा से वहन करने के लिए पुरूषों और स्त्रियों का समान रूप से शिक्षित होना अनिवार्य है। हमारे देश मे आज भी पुरूष और स्त्रियों में भारी शैक्षिक असमानता है। गांवो का पिछड़ापन मूल रूप से अशिक्षित होना ही मुख्य कारण है। अज्ञान के अन्धकार में फंसे व्यक्तियों के मन में यह इच्छा ही उत्पन्न नहीं होती कि वे अपना और अपनी संतान के जीवन–स्तर को ऊंचा उठाएं। जंग खाये संस्कारों और अन्धविश्वासों मे जकड़े लोग मुक्त वातावरण में सांस लेना पसंद नहीं करते। संतानों को ईश्वर की देन कह कर स्वीकार करते जाते है। परम्पराओं का अनुसरण करते हुए आज भी बाल–विवाह से पूर्णतया मुक्त नहीं हुए है। अनेक व्यक्ति ऐसे भी होते है जो पुत्र प्राप्त होने तक जनसंख्या की वृद्धि करते रहते है।

अन्ततः अनेक समस्याओं की जड़ जनसंख्या वृद्धि ही है। इसलिए आज सारे देश की जनता को एक जुट होकर इस पर नियंत्रण करने का प्रयत्न करना है। जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण को हमें जन आन्दोलन का रूप देना है। हमारी सरकार द्वारा चलाई जा रही परिवार कल्याण योजना को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करना भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। भारत सरकार द्वारा इस योजना का व्यापक प्रचार एवं प्रसार किया जा रहा है। सभी राज्यों में जिला एवं उपमण्डल स्तर पर कर्मचारियों के लिए परिवार नियोजन प्रशिक्षण केन्द्र खोले गए है जो दूर–दराज के गांवों में जाकर लोगों को इस बारे अवगत करवाते है तथा छोटा परिवार होने के फायदे बताते है। वर्तमान मे जो आंकड़े सरकार के समक्ष आए है शहर ही नहीं अपितु शिक्षित ग्रामीण लोग भी छोटे परिवार को अपना रहे है। जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए हमें युद्ध–स्तर पर कार्य करना होगा। स्कूल, कालेज स्तर पर जनसंख्या वृद्धि से होने वाले नुकसान से बच्चों, युवकों को अवगत करवाना होगा। तभी एक सुखद, समृद्ध, सुसंगठित और शक्तिशाली देश की परिकल्पना की जा सकती है।